

# तताँरा वामीरो कथा कक्षा - दसवीं

विषय – हिंदी

पाठ : ६

पाठ का नाम : तताँरा वामीरो कथा

PPT-1

**CHANGING YOUR TOMORROW**

## लेखक परिचय

लेखक - लीलाधर मंडलोई  
जन्म - 1954 (छिंदवाड़ा -गुढ़ी)

**जीवन परिचय:-** 1954 की जन्माष्टमी के दिन छिंदवाड़ा जिले के एक छोटे से गाँव गुढ़ी में जन्मे **लीलाधर मंडलोई** की शिक्षा-दीक्षा भोपाल और रायपुर में हुई। प्रसारण की उच्च शिक्षा के लिए 1987 में कामनवेल्थ रिलेशंस ट्रस्ट, लंदन की ओर से आमंत्रित किए गए। इन दिनों प्रसार भारती दूरदर्शन के महानिदेशक का कार्यभार संभाल रहे हैं।



## पाठ प्रवेश

जो सभ्यता जितनी अधिक पुरानी होगी उतनी ही अधिक किस्से - कहानियाँ उससे जुड़ी होती है जो हमें सुनने को मिलती हैं। जो किस्से - कहानियाँ हमें सुनने को मिलती हैं जरूरी नहीं कि वो उसी तरह घटित हुई हो जिस तरह वो हमें सुनाई जा रही हों। इतना जरूर होता है कि इन किस्सों और कहानियों में कोई न कोई सीख छुपी होती है। अंदमान निकोबार द्वीपसमूह में भी बहुत तरह के किस्से - कहानियाँ मशहूर हैं। इनमें से कुछ को लीलाधर मंडलोई ने लिखा है।



प्रस्तुत पाठ 'तताँरा- वामीरो कथा' अंडमान - निकोबार द्वीप समूह के एक छोटे से द्वीप पर केंद्रित है। उस द्वीप पर एक -दूसरे से शत्रुता का भाव अपनी अंतिम सीमा पर पहुँच चुका था। इस शत्रुता की भावना को जड़ से उखाड़ने के लिए एक जोड़े को आत्मबलिदान देना पड़ा था। उसी जोड़े के बलिदान का वर्णन लेखक ने प्रस्तुत पाठ में किया है।

प्यार सबको एक साथ लाता है और नफरत सब के बीच दूरियों को बढ़ाती है , इस बात से भला कौन इनकार कर सकता है। इसलिए जो कोई भी समाज के लिए अपने प्यार का ,अपने जीवन का बलिदान करता है ,समाज न केवल उसे याद रखता है बल्कि उसके द्वारा किए गए त्याग और बलिदान को बेकार नहीं जाने देता। यही वह कारण है जिसकी वजह से तत्कालीन समाज के सामने मिसाल कायम करने वाले इस जोड़े को आज भी इस द्वीप के निवासी गर्व और श्रद्धा से याद करते हैं।

## संबंधित प्रश्न -

१. तताँरा - वामीरो किस द्वीप की कहानी है?
२. इस कहानी में किस जोड़े की बात कही गई है?
३. सभी के बीच की दूरियाँ कौन बढ़ाता है ?
४. इस जोड़े ने कौन -सा मिशाल कायम किया ?

## १ सामान्य उद्देश्य :

' प्रेम जाति - धर्म या किसी अन्य सीमा का बंधन नहीं स्वीकारता ।

## २ विशिष्ट उद्देश्य :

जो परम्पराएँ मनुष्य जाति की उन्नति में बाधक हों , तो उन्हें तोड़ देना अच्छा है।

## पाठ का सार

यह पाठ अंदमान निकोबार द्वीप समूह के एक प्रचलित लोककथा पर आधारित है। अंदमान निकोबार दक्षिणी द्वीप लिटिल अंदमान है जो की पोर्ट ब्लेयर से लगभग सौ किलोमीटर दूर स्थित है। इसके बाद निकोबार द्वीपसमूह का पहला प्रमुख द्वीप कार-निकोबार है जो की लिटिल अंदमान से 96 कि.मी. दूर है। पौराणिक जनश्रुति के अनुसार ये दोनों द्वीप पहले एक ही थे। इनके अलग होने के पीछे एक लोककथा आज भी प्रचलित है।

जब दोनों द्वीप एक थे तब वहाँ एक सुन्दर सा गाँव था जहाँ एक सुन्दर और शक्तिशाली युवक रहा करता था जिसका नाम ततारा था। वह एक नेक और ईमानदार व्यक्ति था और सदा दूसरों की मदद के लिए तत्पर रहता था। निकोबारी उसे बेहद प्रेम करते थे। वह अपने गाँव के लोगों के साथ सारे द्वीप की भी सेवा करता था। वह पारंपरिक पोशाक में रहने के साथ अपनी कमर में सदा एक लकड़ी की तलवार बाँधे रहता था। वह कभी तलवार का उपयोग नहीं करता था, लोगों का मत था की तलवार में दैवीय शक्ति थी। एक शाम ततारा दिनभर के अथक परिश्रम के बाद समुद्र के किनारे टहलने निकल पड़ा। सूरज डूबने को था, समुद्र से ठंडी बयारें आ रहीं थीं। पक्षियाँ अपने घरों को वापस जा रहीं थीं। ततारा सूरज की अंतिम किरणों को समुद्र पर निहारा रहा था तभी उसे कहीं पास से एक मधुर गीत गूँजता सुनाई दिया सुध-बुध खोने लगा। लहरों की एक प्रबल वेग ने उसे जगाया। वह जिधर से गीत के स्वर आ रहे थे उधर बढ़ता गया।

उसकी नजर एक युवती पर पड़ी जो की वह श्रृंगार गीत गा रही थी। अचानक एक समुद्री लहर उठी और युवती को भिगो दिया जिसके हड़बड़ाहट में वह अपना गाना भूल गयी। ततारा ने विनम्रता पूर्वक उसके मधुर गायन छोड़ने के पीछे वजह पूछी। युवती उसे देखकर चौंक गयी और ऐसे असंगत प्रश्न का कारण पूछने लगी। ततारा उससे बार-बार गाने को बोल रहा था। अंत में ततारा को अपनी भूल का अहसास हुआ और उसने क्षमा माँगकर उसका नाम पूछा। उसने अपना नाम वामीरो बताया। ततारा ने उसे अपना नाम बताते हुए कल फिर आने का आग्रह किया।

वामीरो जब अपने घर लपाती पहुँची तो उसे भीतर से बेचैनी होने लगी। उसने ततारा के व्यक्तित्व में वह सारा गुण पाया जो की वह अपने जीवन साथी के बारे में सोचती थी परन्तु उनका संबंध परंपरा के विरुद्ध था इसलिए उसने ततारा को भूलना ही बेहतर समझा। किसी तरह दोनों की रात बीती। दूसरे दिन ततारा लपाती के समुद्री चट्टान पर शाम में वामीरो की प्रतीक्षा करने लगा। सूरज ढलने को था सहसा तभी उसे नारियल के झुरमुटों के बीच एक आकृति दिखाई दी जो की वामीरो ही थी। अब दोनों रोज शाम में मिलते और एक दूसरे को एकटक निहारते खड़े रहते। लपाती के कुछ युवकों ने उन दोनों के इस मूक प्रेम को भाँप लिया और यह बात हवा की तरह सबको मालूम हो गयी। परन्तु दोनों का विवाह संभव ना था क्योंकि दोनों अलग-अलग गाँव से थे। सबने दोनों को समझाने का पूरा प्रयास किया किन्तु दोनों अडिग रहे और हर शाम मिलते रहे।



कुछ समय बाद ततार्रा के गाँव पास में पशु-पर्व का आयोजन था जिसमें सभी गाँव हिस्सा लिया करते। पर्व में पशुओं के प्रदर्शन के अतिरिक्त युवकों की भी शक्ति परीक्षा होती साथ ही गीत-संगीत और भोजन का भी आयोजन होता। शाम में सभी लोग पास आने लगे और धीरे-धीरे विभिन्न कार्यक्रम होने लगे परन्तु ततार्रा का मन इनमें ना होकर वामीरो को खोजने में व्यस्त था। तभी उसे नारियल के झुंड के पीछे वामीरो दिखाई दी। वह ततार्रा को देखते ही रोने लगी। ततार्रा विह्वल हुआ। रुदन का स्वर सुनकर वामीरो की माँ वहाँ पहुँच गयीं और उसने ततार्रा को बुरा-भला कहकर अपमानित किया। गाँव के लोग भी ततार्रा के विरोध में आवाज उठाने लगे। यह ततार्रा के लिए असहनीय था। उसे परंपरा पर क्षोभ हो रहा था और अपनी असहायता पर गुस्सा। अचानक उसका हाथ तलवार की मूठ पर जा टिका और क्रोध में उसने अपनी तलवार निकालकर धरती में घोंप दिया और अपनी पूरी ताकत लगाकर खींचने लगा। जहाँ से लकीर खींची थी वहाँ से धरती में दरार आने लगी। द्वीप के दो टुकड़े हो चुके थे एक तरफ ततार्रा था और दूसरी तरफ वामीरो। दूसरा द्वीप धँसने लगा। ततार्रा को जैसे ही होश आया उसने दूसरे द्वीप का कूद कर सिरा पकड़ने की कोशिश की परन्तु सफल ना हो सका और नीचे की तरफ फिसलने लगा। दोनों के मुँह से चीख निकल रही थी।

**THANKING YOU**  
**ODM EDUCATIONAL GROUP**